

अपराहन 3.44 बजे

प्रधानमंत्री द्वारा वक्तव्य

**राज्यों के बीच जल बंटवारे से संबंधित मुद्दे
का समाधान तलाशना**

[अनुवाद]

प्रधानमंत्री (डा. मनमोहन सिंह): अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय सदन को सूचित करना चाहूंगा कि केन्द्रीय सरकार संबंधित राज्यों के बीच पानी के बंटवारे से संबंधित हाल की घटनाओं के बारे में व्यक्त की गई चिंताओं को समझती है। हमें देश की एकता और अखंडता की रक्षा करते हुए और संबंधित राज्यों के हितों को देखते हुए इस मामले को हल करने के लिए एक स्थायी समाधान ढूँढना होगा।

इसलिए, मैंने पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्रियों को चर्चा के लिए बुलाया है ताकि इस समस्या का सौहार्दपूर्ण हल निकाला जा सके।

संसद के दोनों सदनों के विपक्ष के नेताओं ने भी आज सुबह मुझसे मुलाकात की और उन्होंने अपनी गंभीर चिंता से अवगत कराते हुए मुझे इस मुद्दे का हल निकालने में अपना पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

...(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय: आप संतुष्ट हैं?

...(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय: माननीय सदस्यों, कृपया मेरी टिप्पणी की प्रतीक्षा करें।

[हिन्दी]

श्री मोहन रावले (मुम्बई दक्षिण-मध्य): इसमें महाराष्ट्र का कोई जिक्र नहीं है। ...(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय: आप केवल महाराष्ट्र के बारे में चिंतित हैं। मैं भी महाराष्ट्र के बारे में उतना ही चिंतित हूँ। यह देश का एक

महत्वपूर्ण हिस्सा है। देश के हर हिस्से को इसी दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिये।

माननीय संसदीय कार्यमंत्री ने पहले ही सभा को आश्वासन दिया है कि एक या दो दिन में महाराष्ट्र की स्थिति पर वक्तव्य दिया जायेगा।

...(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री मोहन रावले: प्रधानमंत्री जी यहां बैठे हुए हैं। ...(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय: श्री रावले, आपने मुझे कुछ आश्वासन दिया था और आप उसके विरुद्ध कार्य कर रहे हैं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: माननीय प्रधानमंत्री यहां उपस्थित हैं, सभा के नेता यहां उपस्थित हैं और माननीय संसदीय कार्य मंत्री भी यहां पर उपस्थित हैं।

आपने सदस्यों की समस्याओं को सुना है। उनके आग्रह पर निर्णय लेने का अधिकार पूर्ण रूप से आप पर है। आप जो उचित समझे वो निर्णय ले सकते हैं। परन्तु उनके द्वारा व्यक्त किये गये विचारों को ध्यान में रखा जाये। निर्णय लेने का अधिकार पूर्ण रूप से आप पर है।

डा. मनमोहन सिंह: अध्यक्ष महोदय, सभा की कार्यवाही सुचारू ढंग से चले, मैं इस बात के लिए बहुत उत्सुक हूँ। माननीय सदस्यों द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं के प्रति मैं सम्मान व्यक्त करता हूँ और उन्हें आश्वासन देता हूँ कि मैं स्वयं एक वक्तव्य दूंगा, परन्तु इस विषय के अध्ययन के लिए मुझे कुछ समय चाहिये ... (व्यवधान)

श्री मोहन रावले: क्या यह महाराष्ट्र के बारे में है?

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: यूस, महाराष्ट्र के बारे में कहा है।

[अनुवाद]

रक्षा मंत्री (श्री प्रणव मुखर्जी): महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि यदि माननीय सदस्यों ने हमें बता दिया होता कि